

इकाई 1: पाठ्य पुस्तक, पाठ्यक्रम एवं पाठ्यचर्या

इकाई की रूपरेखा

- 1.0 प्रस्तावना
- 1.1 उद्देश्य
- 1.2 पाठ्य पुस्तक की आवश्यकता
- 1.3 पाठ्यक्रम एवं पाठ्यचर्या
- 1.4 पाठ का अवलोकन और विश्लेषण
- 1.5 पाठ्य पुस्तक विश्लेषण
- 1.6 सारांश
- 1.7 अभ्यास प्रश्न/चिन्तनात्मक प्रश्न
- 1.8 प्रगति की जाँच के लिए उत्तर
- 1.9 सन्दर्भ/अन्य अध्ययन

1.0 प्रस्तावना

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 के अनुसार पाठ्यपुस्तकों में इस प्रकार की सामग्री संकलित की जाए जो बच्चों के ज्ञान, समझ, दृष्टिकोण और कौशलों को बनाने-संवारने में मददगार हो सके। बच्चों के स्थानीय परिवेश व उसके अनुभवों को भी सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में महत्व देते हुए आगे बढ़ने के अवसर पाठ्यपुस्तक में होने चाहिए। पाठ्यपुस्तकें ऐसी हों जो अपने विषय की प्रकृति से संबंध रखे और बच्चे उसको पढ़ते हुए अपना सोचना विचारना जारी रख सकें न कि ज्ञान को मात्र प्रदत्त के रूप में ग्राह्य करें। पाठ्यपुस्तकों के पाठ्यक्रम में क्या सैद्धांतिक व प्रायोगिक विषयवस्तु रखी जाए जिससे विशिष्ट उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए ज्ञान, कौशल और अभिवृत्तियों को खास बढ़ावा मिले सके। बच्चों के सभी अनुभव जो विद्यालय एवं घर के वातावरण में, समुदाय के साथ या फिर अन्य माध्यमों से होते हैं आदि सभी का सम्पूर्ण समावेश पाठ्यक्रम कहा जाता है। अतः पाठ्यक्रम का चयन शिक्षार्थी की मानसिक आयु, अभिरुचि का स्तर और शिक्षार्थी के वर्तमान एवं भविष्य के जीवन में उपयोगिता के आधार पर किया जाना चाहिए। पाठ्यक्रम के लिए स्कूली तंत्र में पाठ्यपुस्तक सीखने के एक माध्यम के रूप में प्रावधानित की जाती है। पाठ्यक्रम में पाठ्यचर्या का भी होना अत्यंत आवश्यक होता है जिनकी रचना कुछ विशिष्ट शैक्षिक उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए की जाती है। उद्देश्यों का एक ऐसा समूह जिसमें यह शामिल हो कि कक्षानुरूप विषयवस्तु के लिहाज से क्या पढ़ाया जाए कि ज्ञान, कौशल एवं अभिवृत्ति को बढ़ावा मिलें इन शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति विद्यार्थी किस रूप में कर रहे

हैं, इसको जाँचने के लिए पाठ्यचर्या में मूल्यांकन एवं आकलन योजना भी होनी चाहिए। इस इकाई में हम उपरोक्त बिन्दुओं पर विस्तार से चर्चा करेंगे।

1.1 उद्देश्य : इस इकाई को पढ़ने के बाद आप—

- पाठ्य पुस्तक की आवश्यकता के बारे में जान सकेंगे।
- पाठ्यक्रम एवं पाठ्यचर्या के अर्थ को समझकर बता सकेंगे।
- पाठ का अवलोकन और विश्लेषण के बारे में जानकर स्पष्ट कर सकेंगे।
- पाठ्य पुस्तक का विश्लेषण करना जान सकेंगे।

1.1 पाठ्य पुस्तक की आवश्यकता

पाठ्यपुस्तकें विद्यालय या कक्षा में छात्रों तथा शिक्षकों के लिए विशेष रूप से तैयार की जाती हैं जो विषय से संबंधित पाठ्यवस्तु का प्रस्तुतीकरण करती हैं। वास्तव में पाठ्य-पुस्तक की आवश्यकता मार्गदर्शन के लिए पड़ती है। वर्तमान शिक्षा में बदलते शैक्षिक अंतर्दृष्टि, विचारों एवं शोध करने व उससे प्राप्त नतीजों के आधारों पर पाठ्यपुस्तकों को समय-समय पर बदलने की आवश्यकता है। पाठ्यपुस्तकें मात्र सूचना आधारित न होकर बच्चों को चिंतन व खुद से करके सीखने अर्थात् ज्ञान का सृजन करने के अवसर देने वाले दृष्टिकोण पर आधारित होनी चाहिए। शासकीय शालाओं में बच्चों की पहुँच में पाठ्यपुस्तकें ही एकमात्र सीखने-सिखाने का प्रमुख संसाधन होती हैं इसलिए बच्चों के लिए गुणवत्ता पूर्ण पाठ्यपुस्तकों का होना आवश्यक है।

पाठ्य पुस्तकें वे पुस्तकें हैं जो किसी स्तर के बच्चों की पाठ्यचर्यानुसार तैयार की जाती हैं। इनमें वे तथ्य एवं सूचानाएं संकलित होती हैं, जिनका ज्ञान उस स्तर के बच्चों को देना चाहते हैं। आज की सम्पूर्ण शिक्षा ही पाठ्य-पुस्तकों पर ही आधारित है। आज ये पाठ्यपुस्तकें शिक्षा के मुख्य साधन के रूप में प्रयोग की जाती हैं। अतः वर्तमान में पाठ्यपुस्तकों का अत्यधिक महत्व है। सभी कक्षाओं के लिए पाठ्यपुस्तकों का होना अनिवार्य है। पाठ्य-पुस्तकें शिक्षक के कार्य की परिपूरक होती हैं। पाठ्य पुस्तकें अध्यापकों के लिए पुस्तकें शिक्षित करने का सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्रोत हैं। शैक्षिक विकास एवं पाठ्यचर्या विकास में पाठ्यपुस्तक चयन एवं लेखन शामिल रहता है। पाठ्यपुस्तक अथवा पुस्तक अनेक प्रकार के कार्य करती हैं।

पाठ्य पुस्तक की परिभाषा:

हैरोलिकर के अनुसार: पाठ्यपुस्तक ज्ञान, अनुभवों, भावनाओं, विचारों तथा प्रवृत्तियों व मूल्यों का संचय का साधन है।

हॉलक्वेस्ट के अनुसार: पाठ्य-पुस्तक शिक्षण क्रियाओं एवं अभिप्रायों के लिए सुव्यवस्थित चिन्तन एवं ज्ञान का लिखित रूप है।

हर्ल आर. डगलस के अनुसार— अध्यापकों के अनुभवों एवं विश्लेषण के अनुसार पाठ्यपुस्तक पढ़ने का महत्वपूर्ण आधार है।

माध्यमिक शिक्षा आयोग ने 1952 में पाठ्यपुस्तकों के संदर्भ में इस बात को इंगित किया था कि उस समय की पाठ्यचर्या संकीर्ण, किताबी और सैद्धांतिक थी जिसका पाठ्यक्रम बोझिल और पाठ्यपुस्तकें अनुपयुक्त थीं। इस आयोग ने यह सुझाव दिया कि प्रत्येक राज्य में एक शक्तिशाली समिति का गठन हो जो पाठ्यपुस्तकों का चयन करें एवं उपयुक्त आधार बनाए। आयोग ने बल देकर कहा था कि किसी भी अध्ययनीय विषय के लिए कोई एक पाठ्यपुस्तक निर्देशित नहीं होनी चाहिए, बल्कि मानकों पर खरी, सोची समझी, परखी हुई पाठ्यपुस्तकों के सुझाव विद्यालयों को दिए जाएँ जिसमें से वे जो विकल्प चाहे चुन लें।

1964-66 के शिक्षा आयोग ने भी स्कूली शिक्षा की गुणवत्ता की ओर ध्यान आकर्षित किया है। आयोग ने पाठ्यपुस्तकों की निम्न कोटि का कारण पाठ्यपुस्तकों की तैयारी एवं निर्माण में शोध की कमी को बताया और विषयों के एकीकरण के बिन्दुओं को चिन्हित किया। आयोग ने राष्ट्रीय मानकों को परिभाषित करने की मांग की और केन्द्रीय पाठ्यपुस्तकों का सुझाव दिया जो राष्ट्रीय मानकों के आधार पर हों। सुझाव था कि पाठ्यपुस्तक निर्माण राष्ट्रीय स्तर और राज्य स्तर पर शुरू हो और राज्य स्तर पर भी संस्थाएँ स्थापित हों। यदि हम ध्यान से देखें तो पाठ्यपुस्तकों की समस्यात्मक भूमिका अंग्रेजों के समय की शिक्षा व्यवस्था से शुरू होकर आज तक चल रही है और अब तो स्कूल और कक्षा में इसने सबसे महत्वपूर्ण स्थान पा लिया है और पाठ्यचर्या एवं पाठ्यक्रम की भूमिका को दरकिनार कर दिया है।

तो आइये पाठ्यपुस्तकों की आवश्यकता के निम्नलिखित विभिन्न कारणों के बारे में जानें—

- पुस्तकों की सहायता से शिक्षा की प्रक्रिया बहुत ही व्यवस्थित ढंग से चलती है और अध्यापक पूरे समय हेतु योजना बना सकते हैं।
- पाठ्यपुस्तकें पाठ्यक्रम में निर्धारित उद्देश्यों को पूर्ण करने में सहायक हैं।
- पाठ्यक्रम के अनुसार विषय का संगठित ज्ञान एक स्थान पर मिल जाता है।
- जब कक्षा छात्र कक्षा ज्ञान में अधूरे रहते हैं। तब पुस्तकों का सहारा लेकर उस अधूरे ज्ञान को स्पष्ट एवं निश्चित करते हैं। शिक्षक केवल पथ-प्रदर्शक के रूप में कार्य करता है।
- छात्रों एवं शिक्षकों को यह जानकारी मिलती है कि किस कक्षा स्तर के लिये कितनी विषय-वस्तु का अध्ययन-अध्यापन करना है।
- छात्रों का मानसिक स्तर इतना नहीं होता कि वे विद्यालय में पढ़ायी हुई विषय-वस्तु को एक ही बार में सीख सकें। उन्हें विषय-वस्तु को कई बार दोहराना भी पड़ता है। इस कार्य में पाठ्यपुस्तकें सहायक हैं।
- पाठ्य-पुस्तकें अध्यापक की पूरक होती हैं। अध्यापक के उपस्थित न रहने पर यदि छात्र चाहे तो स्वअध्ययन से पाठ को आगे पढ़ा सकते हैं।
- छात्रों एवं शिक्षकों के समय की बचत होती है।

- स्वाध्याय द्वारा ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है।
- पाठ को दोहराने अथवा गृहकार्य कराना बच्चों को अत्यन्त सहायक सिद्ध होता है।
- बच्चों में स्वाध्याय की आदत का विकास होता है।
- कक्षा-कार्य तथा मूल्यांकन संभव होता है।
- बच्चों की स्मरण शक्ति एवं तर्क शक्ति का विकास होता है।
- मंद बुद्धि तथा प्रतिभाशाली दोनों प्रकार के बच्चों के लिये उपयोगी होती हैं।
- विषय-वस्तु को तार्किक ढंग से प्रस्तुत किया जाता है जिससे बच्चों के लिए विषय-वस्तु सरल एवं सुगम हो जाती है।
- पाठ्य-पुस्तकें समस्याओं को हल करने में सहायता करती हैं तथा कुछ पहेली टाइप समस्याओं से छात्रों का मनोरंजन भी हो सकता है।
- ज्ञान को व्यवस्थित करने में पाठ्यपुस्तकें सहायक होती हैं।
- अध्ययन में एकरूपता आ जाती है।
- शिक्षकों एवं छात्रों को विद्वानों के विचारों से परिचित कराती है।
- कक्षा शिक्षण की कमियों को दूर करती हैं।
- परीक्षा लेने में भी पाठ्य-पुस्तकें शिक्षकों की सहायता करती हैं क्योंकि प्रश्न पाठ्य-पुस्तकों में से रखकर प्रश्न-पत्रों को पाठ्यक्रम के अनुसार सीमित तैयारी के साथ परीक्षा में अथवा मूल्यांकन में सफल हो जाते हैं।

1.2 पाठ्यक्रम (Curriculum) एवं पाठ्यचर्या (Syllabus)

(अ) पाठ्यक्रम: यह एक व्यापक (broader) शब्द है, जो शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त करने में सहायता प्रदान करता है। बच्चों के सभी अनुभव जो विद्यालय के वातावरण में, घर के वातावरण में, समुदाय के साथ या फिर अन्य माध्यमों से प्राप्त अनुभव आदि सभी का सम्पूर्ण समावेश पाठ्यक्रम कहलाता है। पाठ्यक्रम का निर्धारण अकादमिक प्राधिकरण द्वारा किया जाना चाहिए, जिसमें- संवैधानिक मूल्य, बच्चों को निर्भय बनाने, बाल केन्द्रित, गतिविधि आधारित प्रक्रिया को अपनाया जाय।

पाठ्यक्रम को बनाने में निम्नलिखित बिन्दुओं की ओर ध्यान देना चाहिए-

- पाठ्यक्रम का चयन शिक्षार्थी की मानसिक आयु, अभिरुचि का स्तर और शिक्षार्थी के वर्तमान एवं भविष्य के जीवन में उपयोगिता के आधार पर किया जाना चाहिए।

- प्रत्येक बालक को उसके क्षमता स्तर और अभिरुचि के अनुरूप उपयोगी अनुभव मिलना चाहिए, जिससे कि वह जीवन की परिस्थितियों में महत्वपूर्ण अवधारणाओं को ग्रहण करने में सफल हो सके।
- क्रियाकलाप वास्तविक जीवन की समस्याओं पर आधारित हों और शिक्षार्थी के जीवन में उनका महत्व होना चाहिए।
- प्रयोग एवं शोध की प्रवृत्ति को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।
- रटने की विधि के स्थान पर स्वतः खोजने की विधि पर बल दिया जाना चाहिए।
- दैनिक जीवन में समस्याओं का विश्लेषण करने, उन्हें हल करने एवं व्यवसायों में प्रवेश हेतु आवश्यक ज्ञान और कौशल पर ध्यान दिया जाना चाहिए।

पाठ्यक्रम के मानदण्ड (Criteria of Curriculum)

पाठ्यक्रम के मुख्यतः चार मानदण्ड बताये गये हैं जो निम्नलिखित हैं:

- **विषय (Subject) :-** पाठ्यक्रम के अन्तर्गत सम्मिलित किये जाने में विषय—कला, संगीत, साहित्य, भाषा (हिन्दी, अंग्रेजी) धार्मिक शिक्षा, इतिहास, भूगोल, सामाजिक विज्ञान, भौतिक विज्ञान, जीव-विज्ञान, गणित, शारीरिक शिक्षा, अर्थशास्त्र, मनोविज्ञान, समाजशास्त्र, स्वास्थ्य-शिक्षा आदि।
- **अनुभव (Experiences):** पाठ्यक्रम में अधोलिखित अनुभवों को महत्व दिया जाता है—सर्जनात्मक अनुभव, धार्मिक तथा आध्यात्मिक, ललित कला, मानवता, सामाजिक, राजनैतिक, ऐतिहासिक, भौगोलिक(समय तथा स्थान) भौतिक—व्यक्तिगत तथा सामूहिक सहकारी, सम्प्रेषण, अभिव्यक्ति, गणित सम्बन्धी, वैज्ञानिक, औद्योगिक, आर्थिक, मूल्यांकन सम्बन्धी, उत्पादन सम्बन्धी आदि।
- **कौशल(Skills) :** लिखना, पढ़ना, देखना, बोलना, निरीक्षण करना, विभिन्न प्रकार के यंत्रों को प्रयोग करने का कौशल, सुलेख, सम्प्रेषण का कौशल, अशाब्दिक, सम्प्रेषण का कौशल, मानसिक क्रियायें, मापन, मूल्यांकन, गणना, समस्या समाधान, अनुमान लगाना, सामाजिक कौशल—स्वीकार करने का कौशल, कार्य करना, अन्तःक्रिया, निर्णय करना, विभेदीकरण, ललित कला, शिल्प तथा आर्ट के कार्य करना आदि।
- **अभिवृत्तियाँ (Attitudes):** अभिवृत्तियों को भी पाठ्यक्रम के प्रारूप में सम्मिलित किया जाता है—आत्म-विश्वास, स्वःमूल्यांकन, स्वः अनुशासन, ईमानदारी, सच्चाई, संवेदनशीलता, वस्तुनिष्ठता, आत्मा-चिंतन, कल्पनाशक्ति, समायोजन की प्रकृति, एकाग्रचित होने की प्रवृत्ति आदि।

पाठ्यक्रम निर्माण के सिद्धान्त

पाठ्यक्रम का निर्माण करते समय सबसे प्रमुख बात यह है कि पाठ्यक्रम में उन्हीं विषयों, क्रियाओं एवं विषयवस्तु को सम्मिलित किया जाये, जिनका किसी न किसी रूप में बच्चों के

वर्तमान जीवन से सम्बन्ध हो तथा साथ ही वे उनके भावी जीवन के लिए उपयोगी भी हो। जिससे बच्चों का शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, व्यवसायिक, सांस्कृतिक, चारित्रिक एवं नैतिक विकास हो सके।

तो आइये पाठ्यक्रम निर्माण के विभिन्न सिद्धान्तों के बारे में जाने—

- **लचीलेपन का सिद्धान्त:** पाठ्यक्रम लचीला होना चाहिए ताकि विद्यार्थी व्यक्तिगत भिन्नताओं के आधार पर अपनी व्यक्तिगत रुचियों, प्रवृत्तियों, आवश्यकताओं, क्षमताओं के अनुसार सीख सकें। यदि पाठ्यक्रम कठोर होगा तो वह सम्पूर्ण छात्रों के लिए उपयोगी नहीं होगा। इसमें शिक्षा मनोविज्ञान की सहायता से यह दोष दूर हो सकता है।
- **क्रिया केन्द्रित सिद्धान्त:** पाठ्यक्रम क्रिया-केन्द्रित(Activity Centred) होना चाहिए। इस कारण पाठ्यक्रम 'करके सीखना' (Learning by Doing) के सिद्धान्त पर आधारित होना चाहिए।
- **बाल केन्द्रित होना:** पाठ्यक्रम बाल केन्द्रित होना चाहिए अर्थात् छात्र की जिज्ञासा एवं रुचियों का ध्यान रखकर छात्र की आवश्यकताओं के अनुरूप ही पाठ्यक्रम का निर्माण करना चाहिए। पाठ्यक्रम निर्माण में छात्र की रुचियों, आवश्यकताओं, प्रवृत्तियों, अभिवृत्तियों, क्षमताओं, आयु एवं बुद्धि आदि पर ध्यान देना अति आवश्यक है।
- **सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों के विकास का सिद्धान्त:** पाठ्यक्रम का निर्माण इस प्रकार करना चाहिए जिससे कि बच्चों में सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों का विकास हो सके तथा वे एक कुशल सामाजिक नागरिक बन सकें।
- **व्यक्तिगत भिन्नताओं को ध्यान में रखना:** सभी छात्रों की उपलब्धि एक समान नहीं होती है। कुछ पिछड़े हुए (कम बुद्धि के) तथा कुछ प्रतिभाशाली छात्र होते हैं। अतः दोनों प्रकार के छात्रों की प्रतिभाओं को ध्यान में रखकर कुछ सरल विषयवस्तु तथा कुछ कठिन विषय-वस्तु प्रस्तुत करनी चाहिए, जिससे कमजोर तथा प्रतिभावान छात्र अपनी जिज्ञासाओं को पूर्ण रूप से सन्तुष्ट कर सकें।
- **सृजनात्मक एवं रचनात्मक सिद्धान्त:** पाठ्यक्रम में ऐसी विषयवस्तु का चयन किया जाना चाहिए जिससे कि बच्चों में रचनात्मक तथा सृजनात्मक कौशलों का विकास हो सके।
- **मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त:** इस सिद्धान्त के अनुसार पाठ्यक्रम बाल-केन्द्रित होना चाहिए। बाल-केन्द्रित से आशय: बच्चों के मानसिक स्तर, आवश्यकता, रुचि, क्षमता, आयु, जिज्ञासा, योग्यता और उनकी सक्रिय सहभागिता को प्राथमिकता देना।
- **उच्च कक्षाओं की आवश्यकता पूर्ति का सिद्धान्त:** पाठ्यक्रम का निर्माण करते समय उन सभी प्रकरणों, नियमों एवं सिद्धान्तों आदि को उचित स्थान देना चाहिए, जिनकी आवश्यकता उच्च ज्ञान की प्राप्ति में तथा बच्चों के भावी जीवन में उपयोगी हो। जब बच्चे निम्न कक्षा को उत्तीर्ण

करके अगली (उच्च) कक्षा में जाते हैं तो उन्हें नवीन ज्ञान को प्रारम्भ से ही सीखना पड़ता है परन्तु यदि उच्च कक्षा में दिये जाने वाले ज्ञान का कुछ प्रारम्भिक ज्ञान या परिचय दे दिया जाये, तो बालकों को उच्च कक्षाओं में अधिक कठिनाइयों का सामना नहीं करना पड़ेगा। अतः निम्न कक्षाओं का पाठ्यक्रम उच्च कक्षाओं के ज्ञान एवं आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर ही बनाना चाहिए।

- **सह-सम्बन्धता का सिद्धान्त:** पाठ्यक्रम का निर्माण करते समय बच्चों के व्यावहारिक जीवन की समस्याओं, अध्ययन के अन्य विषयों, समाज की नवीन आवश्यकताओं आदि के साथ सह सम्बन्ध की मुख्य बातों पर ध्यान देना अत्यन्त आवश्यक होना चाहिए।

माध्यमिक शिक्षा आयोग (1952-53) ने पाठ्यक्रम निर्माण के निम्नलिखित सिद्धान्तों का स्पष्टीकरण किया है— विविधता का सिद्धान्त, लचीलेपन का सिद्धान्त, समुदाय से सम्बन्धित सिद्धान्त, अवकाश के समय का सदुपयोग से सम्बन्धित सिद्धान्त, पाठ्यक्रम जीवन से सम्बन्धित, विभिन्न क्रियाओं पर आधारित हो एवं समाज की आवश्यकताओं के अनुकूल होना चाहिए आदि।

(ब) पाठ्यचर्या (Syllabus)

पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम के उस पक्ष को कहा जाता है जिसे कक्षा में प्रयोग हेतु व्यवस्थित किया जाता है। पाठ्यचर्या शब्द की उत्पत्ति लैटिन शब्द से हुई है जिसका अर्थ होता है दौड़ का मैदान। यहाँ दौड़ यानी रेस शब्द, समय और मार्ग का द्योतक है। पाठ्य-विवरण की उपयोगिता इस बात पर निर्भर करती है कि उसमें सम्मिलित प्रत्यय, प्रकरण तथा ज्ञान, शिक्षण के उद्देश्यों की प्राप्ति में कहाँ तक सहायक हैं। पाठ्यचर्या को वास्तव में एक तय समय के अंदर दिए हुए पाठ्यक्रम को पूरा किए जाने से जोड़कर देखा जाता है। विद्यार्थियों को दिये जाने वाले ज्ञान व अनुभवों को एक निश्चित समय में कक्षाध्यापन के दौरान विषयवस्तु को सुव्यवस्थित करके शिक्षण करना ही पाठ्यचर्या या पाठ्य-विवरण कहलाता है।

गुड के शिक्षा-शब्दकोष के अनुसार पाठ्यचर्या एक कार्य प्रणाली संदर्शिका होती है, जो किसी कक्षा को किसी विषय के शिक्षण में सहायता के लिए किसी विद्यालय विशेष अथवा व्यवस्था के लिए तैयार की जाती है। इसके अन्तर्गत पाठ्यक्रम के लक्ष्य, अपेक्षित परिणाम, अध्ययन सामग्री की प्रकृति, विस्तार तथा उपयुक्त सहायक सामग्री एवं पाठ्य-पुस्तकों के साथ-साथ अनुपूरक पुस्तकों, शिक्षण विधियों, सहगामी क्रियाओं तथा उपलब्धि मापन के सुझाव भी सम्मिलित किये जाते हैं।

समय-समय पर हमारे देश में पाठ्यचर्या का वर्णन वैदिककालीन, बौद्धिकालीन, मध्यकालीन, आधुनिक पाठ्यचर्या के अन्तर्गत किया गया है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात की पाठ्यचर्या के अन्तर्गत माध्यमिक शिक्षा आयोग(1953), कोठारी शिक्षा आयोग(1964-66) तथा शिक्षा नीति 1968,

नयी शिक्षा नीति 1986 एवं 1992 के संशोधन एवं राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 में किया गया।

पाठ्यचर्या का विकास

पाठ्यचर्या का विकास 1890 के दशक से शुरू हुआ। पाठ्यचर्या पर केन्द्रित पहली पुस्तक “दि कॅरिकुलम फ्रैकलिन बॉबिट” 1918 में प्रकाशित हुई तथा उसके बाद 1924 में “हाउ टु मेक कॅरिकुलम” छपी। अमेरिका ने 1926 में नेशनल सोसाइटी ऑफ द स्टडी ऑफ एजुकेशन ने “दि फाउंडेशन एंड टेक्निक ऑफ कॅरिकुलम कंस्ट्रक्शन” विषय पर वार्षिक पुस्तिका प्रकाशित की। इस तरह 1890 से शुरू होकर पाठ्यचर्या का विकास आंदोलन पूरी दुनिया का एक सशक्त आंदोलन बन गया।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1968 के सुझावों को ध्यान में रखते हुए जब एन.सी.ई.आर.टी. ने अपना “कॅरिकुलम फॉर 10 ईयर स्कूल” प्रकाशित किया, तो उसमें इस बात पर बल दिया गया कि स्वचालन की इस सदी के आगमन से नयी औद्योगिक क्रांति की शुरुआत के चिह्न दिख रहे हैं। विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एन.सी.एफ.एस.ई..2000) का दस्तावेज भी इन भावनाओं को प्रकट करता है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 (National Curriculum Framework 2005) के अनुसार पाठ्यचर्या निर्माण के निर्देशक सिद्धांतों एवं ज्ञान के उपागम (Approach) संबंधी कुछ सिद्धान्त दिये गये, जो इस प्रकार हैं—

(अ) पाठ्यचर्या निर्माण के निर्देशक सिद्धांत: हमारे शैक्षिक उद्देश्यों और शिक्षा की गुणवत्ता में आज गहरी विकृति आ गई है। इसका यह प्रमाण है कि शिक्षा बच्चों और उनके माँ-बाप के लिए तनाव और बोझ का कारण बन गई है। इस विकृति को दूरस्त करने के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 में पाठ्यचर्या निर्माण के पांच निर्देशक सिद्धांत रखे गये हैं जो निम्नानुसार हैं:

- (1) ज्ञान को स्कूल के बाहरी जीवन से जोड़ना
- (2) पढ़ाई रटन्त प्रणाली से मुक्त हो, यह सुनिश्चित करना।
- (3) पाठ्यचर्या का इस तरह संवर्धन कि किया जाय वह बच्चों को चहुँमुखी विकास के अवसर मुहैया करवाए बजाए इसके कि पाठ्यपुस्तक-केन्द्रित बन कर रह जाए।
- (4) परीक्षा को अपेक्षाकृत अधिक लचीला बनाना और कक्षा की गतिविधियों से जोड़ना।
- (5) एक ऐसी अधिभावी पहचान का विकास जिसमें प्रजातांत्रिक राज्य-व्यवस्था के अंतर्गत राष्ट्रीय चिंताएं समाहित हों।

(ब) राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 में ज्ञान के *उपागम (Approach) संबंधी कुछ सिद्धान्त दिये गये, जो निम्नप्रकार से हैं—

- विषय द्वारा दिए गए कौशलों के आधार पर सामाजिक यथार्थ और परिवेश के प्रति आलोचनात्मक दृष्टिकोण का विकास।
- स्थानीय के साथ जुड़ाव, ज्ञान को संदर्भ में रखा जाय, ताकि उसकी प्रासंगिकता और अर्थपूर्णता महसूस की जा सके, स्कूल के बाहर अनुभवों की पुष्टि हो पाए, अवलोकन, वर्गीकरण, श्रेणियाँ बनाकर, प्रश्न पूछ कर इन अनुभवों के संबंध में तर्क करके स्वयं सीखा जा सके।
- विभिन्न अनुशासनों में अंतर्संबंध देखना और ज्ञान में अंतर्निहित जुड़ाव को समझना।
- जाँच के खुलेपन व उपयोगिता को पहचानना और तथ्यों की अस्थायी प्रकृति को समझना।
- स्थानीय ज्ञान, स्थानीय क्षेत्र के रिवाजों व प्रथाओं के साथ जुड़ना और जहाँ भी संभव हो इन्हें स्कूली ज्ञान के साथ जोड़ना।
- प्रश्न करने को प्रोत्साहन देना और नए प्रश्नों की तरफ बढ़ने के लिए अवसर प्रदान करना।
- कक्षीय प्रक्रियाओं में 'समानता' के मुद्दों के प्रति संवेदनशील होना और कई समूहों द्वारा ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों को सीख पाने को लेकर स्थापित रूढ़िबद्ध धारणाओं और भेदभाव के प्रति सजग होना (उदाहरण— लड़कियों को क्षेत्राधारित परियोजनाएँ न देना, नेत्रहीनों को गणित सीखने से वर्जित करना, इत्यादि)
- कल्पनाशीलता को विकसित करना।

(ब) राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 के अनुसार पाठ्यचर्या के क्षेत्र, स्कूल की अवस्थाएं और

आकलन: इसके अनुसार पाठ्यचर्या के क्षेत्र क्रमशः भाषा, गणित, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, कला शिक्षा एवं स्वास्थ्य व शारीरिक शिक्षा, काम और शिक्षा तथा शांति के लिए शिक्षा आदि होनी चाहिए। स्कूल में सीखने के लिए आवास की पर्याप्त व्यवस्था होनी चाहिए। समय-समय पर शिक्षार्थियों का आकलन, शिक्षण के क्रम में आकलन एवं मूल्यांकन होना चाहिए।

***उपागम (Approach):** उपागम शब्द अंग्रेजी के Approach शब्द का हिन्दी रूपान्तर है। आक्सफोर्ड डिक्शनरी के अनुसार अंग्रेजी के एप्रोच शब्द का शाब्दिक अर्थ होता है। to come near, to the act of drawing near अर्थात् निकट लाना था निकट जाने की क्रिया। हिन्दी में उपागम शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है— उप + आगम। उप का अर्थ होता है। समीप तथा आगम का अर्थ होता है। पहुँचना। इस प्रकार शब्द—रचना की दृष्टि से उपागम का अर्थ हुआ नजदीक या निकट ले जाने जाना। शिक्षाशास्त्र में उपागम का अर्थ है वह मार्ग जिसके द्वारा शिक्षा—सामग्री के निकट जाया जाता है। दूसरे शब्दों में शिक्षा के उपागम से हमारा तात्पर्य उन विधाओं, दृष्टिकोण एवं शिक्षा शास्त्र के अनुशीलन की प्रक्रिया से है। जिसकी सहायता से शिक्षाशास्त्र के अनुशीलन की प्रक्रिया से है जिसकी सहायता से शिक्षाशास्त्र की प्रतिपाद्य सामग्री और समस्याओं का विश्लेषण, विवेचन और अध्ययन किया जाता है।

शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 के अनुसार पाठ्यक्रम एवं पठनपाठन सामग्री का निर्माण करते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए:

पाठ्यक्रम का निर्धारण अकादमिक प्राधिकरण द्वारा किया जाना चाहिए, जिसमें— संवैधानिक मूल्य, बच्चों को निर्भय बनाने, बाल केन्द्रित, गतिविधि आधारित प्रक्रिया को अपनाया जाए। पठन—पाठन सामग्री एवं उपकरण, कक्षा के अनुरूप होनी चाहिए। प्रत्येक शाला में एक पुस्तकालय हो, जिसमें समाचार पत्र, पत्रिकाएँ, कहानियों की किताबें तथा खेलकूद हेतु आवश्यक सामग्री एवं उपकरण होना चाहिए। यथासंभव मातृ भाषा में शिक्षा दी जानी चाहिए। सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन (सी.सी.ई.) की सुविधा सम्मिलित होनी चाहिए।

पाठ्यक्रम तथा पाठ्यचर्या में अन्तर

Difference between Curriculum and Syllabus

जब पाठ्यक्रम निर्माण का कार्य पूर्ण हो जाता है तो पूर्ण होने पर ही पाठ्यचर्या का विकास प्रारम्भ हो जाता है तथा इसकी अनिवार्यता को स्वीकारना पड़ता है। सुव्यवस्थित एवं सुनियोजित पाठ्यचर्या के आधार पर ही किसी पाठ्यक्रम तक पहुँचा जा सकता है तथा उसमें सार्थक लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है।

अतः सीखने की इकाइयों का कक्षा एवं विषयवार क्रम निर्धारण ही पाठ्यक्रम है। परन्तु पाठ्यक्रम निर्माण की प्रक्रिया पाठ्यचर्या है।

अपनी प्रगति की जाँच करें

नोट: (अ) अपना उत्तर प्रश्न के नीचे दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।

(ब) अपने उत्तर की तुलना इकाई के अंत में दिए गए उत्तर से कीजिए।

1. पाठ्यपुस्तकों की आवश्यकता के कोई चार कारण लिखिए।

.....
.....
.....

2. पाठ्यक्रम क्या हैं? माध्यमिक शिक्षा आयोग के अनुसार पाठ्यक्रम निर्माण के कौन-कौन से सिद्धान्त हैं?

.....
.....
.....

3. पाठ्यचर्या क्या है? पाठ्यचर्या पर केन्द्रित पहली पुस्तक कब प्रकाशित हुई ?

.....
.....
.....

4. पाठ्यक्रम तथा पाठ्यचर्या में क्या अन्तर है?

.....
.....
.....

1.3 पाठ का अवलोकन और विश्लेषण

अवलोकन एक विधि है जिसमें दृष्टि आधार सामग्री संग्रह में एक प्रमुख साधन होती है। इसमें कानों और ध्वनि की अपेक्षा नेत्रों का प्रयोग निहित होता है। यह घटनाएं जैसे घटती हैं तथा उनके कारण एवं प्रभाव या उनके पारस्परिक सम्बन्धों को देखता है और उन्हें आलेखित करता है। इसमें अन्य व्यक्तियों के व्यवहार जैसा वास्तव में होता है, उसे बिना नियंत्रण के अवलोकन करना होता है।

तो आइये पाठ का अवलोकन करते समय शिक्षण संबंधी निम्नलिखित बिन्दुओं के बारे में जाने कि हमे अवलोकन के समय क्या-क्या ध्यान में रखना चाहिए।

पाठ की विषयवस्तु

- क्या पाठ की विषयवस्तु दी गई है या नहीं।
- क्या पाठ का उपविभाजन दिया गया है या नहीं।
- क्या पाठ में उदाहरण, सारणी, आकृति, नक्शा, रेखाचित्र आदि दिये गये हैं या नहीं।
- क्या पाठ के मुख्य शिक्षण बिन्दु दिये गये हैं या नहीं।

प्रस्तावना

- पाठ की प्रस्तावना किस प्रकार से दी गई है। अर्थात् प्रस्तावना कैसी है, विस्तृत, संक्षिप्त, स्पष्ट अथवा अस्पष्ट आदि।
- क्या प्रस्तावना पूर्व पाठ से तथा नये पाठ से स्वाभाविक ढंग से सम्बद्ध है।
- क्या प्रस्तावना से विद्यार्थियों में उत्सुकता उत्पन्न हुई।

उद्देश्य

- क्या पाठ में उद्देश्य दिये गये हैं या नहीं।
- क्या उद्देश्य विद्यार्थियों के अनुकूलन हैं या नहीं।

पाठ्यवस्तु

- क्या सामग्री विद्यार्थियों के बौद्धिक विकास के अनुकूल है या नहीं।
- क्या पाठ में जरूरी प्रयोग एवं चित्र दिए गये हैं।
- क्या स्थानीय जरूरतों से संबंधित क्षेत्र को सम्मिलित किया गया है।
- क्या बच्चे की पूर्व जानकारी के अनुकूल है या नहीं।
- क्या पाठ की सामग्री की व्याख्या क्रमानुसार है या नहीं।
- क्या पाठ में कठिन स्थलों की व्याख्या करने के लिए कौन सी तकनीकी का प्रयोग किया गया: अर्थात्

- शब्दार्थ बताने में पर्यायवाची, उत्पत्ति संधि, विश्लेषण, उदाहरण, प्रदर्शन आदि
- दृश्य उदाहरण का प्रयोग: चित्र, रेखाचित्र, मॉडल, चार्टस इत्यादि।
- मौखिक उदाहरण का प्रयोग: उपयुक्त, दृष्टांत, कहानी, तुलना इत्यादि।

मुद्रण

- क्या पृष्ठ—रंगीन एवं आकर्षक/रंगीनहीन पर आकर्षक/संतोषजनक है या नहीं।
- क्या पेज की गुणवत्ता बहुत अच्छी, अच्छी, संतोष जनक, पुरानी है एवं उपयोग रहित है।
- क्या स्याही की गुणवत्ता अच्छी, संतोषजनक है या नहीं।
- क्या फोन्ट का आकार पढ़ने में आसान है या नहीं।
- क्या मुद्रण में अशुद्धियाँ हैं या नहीं।

प्रश्नोत्तर

- क्या अध्याय/पाठ के अंत में प्रश्न दिये गए हैं या नहीं।
- प्रश्न कैसे हैं। प्रभावोत्पादक या भ्रामक, संक्षिप्त या लम्बे, सीधे या घुमावदार।
- क्या प्रश्न निबंधात्मक, लघुउत्तरीय, अतिलघुउत्तरीय, बहुविकल्पीय, खाली स्थान, सत्य/असत्य, जोड़ी मिलान एवं एक शब्द में उत्तर देना।
- क्या प्रश्न संबंधित पाठ से ही पूछे गये हैं या नहीं।
- क्या प्रश्न सरल से कठिन की ओर पूछे गये हैं या नहीं।
- क्या पूछे गये प्रश्न बच्चों को मानसिक, बौद्धिक अथवा शारीरिक विकास करने से संबंधित हैं या नहीं।

क्रियाकलाप

क्या प्रयोगिक कार्य/गृहकार्य/असानमेन्ट आदि दिये हैं या नहीं।

सारांश

क्या पाठ के अंत में पाठ का सारांश दिया गया है या नहीं।

1.4 पाठ्य पुस्तक विश्लेषण

पाठ्यक्रम में वर्णित उद्देश्यों व विषय की प्रकृति व कौशल के अनुसार पाठ्यपुस्तक विभिन्न अध्यायों में ज्ञान को संयोजित कर सरल शैली में सीखने का अवसर प्रदान करने का एक माध्यम है। जो केन्द्र या राज्य सरकार द्वारा अधिकृत समाज में विशेषज्ञों के समूह द्वारा आपसी विचार विमर्श और पाठ्यचर्या रूपरेखा में वर्णित सिद्धांतों के आधार पर बनाकर प्रदेश के बच्चों के लिए लागू की जाती है। जिन्हे बदलते समय परिवर्तन की आवश्यकतानुसार समीक्षा कर समय-समय पर संशोधित किया जाता है।

वर्तमान स्कूली व्यवस्था में मौजूद पाठ्यपुस्तकों व उनके पढ़ाने की विधा को परीक्षण करने की भी आवश्यकता है क्योंकि आज भी शासकीय शालाओं में पढ़ने वाले अधिकतर बच्चों के लिए पाठ्यपुस्तक ही सीखने-सिखाने का एकमात्र साधन है, जो बच्चों के सीखने सिखाने में सबसे अहम भूमिका निभाती है। इसलिए छात्राध्यापकों को इसे विषयवार विश्लेषण कर समझने की आवश्यकता है जिसके आधार पर शिक्षण के दौरान आवश्यकतानुसार उसका उपयोग तो करे लेकिन सिर्फ पाठ्यपुस्तक पर ही निर्भर न रहे बल्कि पाठ्यपुस्तकों के अलावा भी सीखने-सिखाने के अवसर तलाश कर सकें व बच्चों को उनके पहले के अनुभवों के साथ स्वयं ज्ञान निर्माण करने के अवसर कक्षा व कक्षा के बाहर उपलब्ध करा सकें। तो आइये पाठ्यपुस्तक विश्लेषण को एक प्रारूप के माध्यम से समझें—

पाठ्यपुस्तक विश्लेषण का प्रारूप

कक्षा:.....

अध्याय का शीर्षक:.....

विषय:.....

क्र.	पाठ्यपुस्तक समीक्षा के बिन्दु	विस्तृत विश्लेषण
1.	पाठ्यक्रम के उद्देश्य की पूर्ति, विषय की प्रकृति एवं कौशल के अनुसार विषयवस्तु का होना।	
2.	विषयवस्तु की प्रस्तुति बच्चों के सीखने के स्तर के अनुकूल है या नहीं।	
3.	विविधता को प्रोत्साहन देने व आत्मीयता स्थापित करने हेतु क्या क्षेत्रीय भाषा के शब्दों का इस्तेमाल हुआ है या नहीं, परीक्षण करना।	
4.	चित्रों के आकार व स्पष्टता, प्रस्तुति, रंग, समायोजन आदि कैसा है।	
5.	पाठ्यपुस्तकें क्या बाल केन्द्रित व बाल सुलभ तरीकों से शिक्षण कराने के अवसर उपलब्ध कराती हैं या नहीं, समीक्षा कीजिए।	
6.	पाठ्यपुस्तकों की विषयवस्तु चित्तनशील, मननशील व ज्ञान सृजन में सहायक है या रटन प्रवृत्ति को बढ़ावा देने वाली है।	

7.	प्रस्तुतीकरण की शैली किस प्रकार है।	
8.	सतत एवं व्यापक मूल्यांकन किस प्रकार किये जाते हैं।	
9.	फोन्ट साइज व मुद्रण/छपाई एवं कागज की गुणवत्ता किस प्रकार है।	
10.	तथ्यात्मक त्रुटि व भाषागत त्रुटियों का ब्यौरा	

हस्ताक्षर

छात्राध्यापक का नाम.....

● प्रारूप आधारित पाठ्यपुस्तक विश्लेषण का नमूना

चर्चा के दौरान शिक्षक प्रशिक्षक छात्र-शिक्षकों को पाठ्यपुस्तक समीक्षा के लिए कक्षा 4 के एक पाठ की समीक्षा को दिए गए फ्रेमवर्क में प्रस्तुत करने का प्रयास किया है जो एक उदाहरण के रूप में उन्हें समझने में मदद कर सकता है यदि आवश्यकता लगे तो इसे देखा जा सकता है। पाठ्यपुस्तक की समीक्षा निम्नानुसार हो सकती है—

क्र.	पाठ्य पुस्तक समीक्षा के बिन्दु	अध्याय: हमारा शरीर
1.	पाठ्यक्रम के उद्देश्य की पूर्ति, एवं विषय की प्रकृति एवं कौशल के अनुसार विषयवस्तु का होना।	क्या पाठ, पाठ्यक्रम के उद्देश्य की पूर्ति करता है, या नहीं। पाठ में उद्देश्यों का विवरण कैसे दिया गया है। लिखना। अर्थात् क्या बच्चों में खोजी प्रवृत्ति को बढ़ावा देने और हाथों से करके सीखने (प्रयोग, गतिविधियाँ आदि) से संबंध रखती है। साथ ही बच्चों में कई तरह के कौशलों का विकास जैसे: अवलोकन करना, जानकारी एकत्र करना एवं विश्लेषण करना, कार्य और कारण के सम्बंध को देखना, निर्णय लेना, पैटर्न सह-सम्बंध तथा कल्पनाशीलता का विकास, समस्याएं पहचानना, निर्णय लेना, समस्याएं पहचानना, विकल्प सुझाना तथा निर्णय लेना, कारण, प्रभाव ढूँढना एवं निवारण करना।
2	विषयवस्तु की प्रस्तुति बच्चों के सीखने के स्तर के अनुकूल है।	पाठ में विषयवस्तु किस स्तर की है। जैसे: क्या विषयवस्तु स्थानीयता व जीवन के संदर्भों से जुड़ाव रखती है एवं क्या भाषा सरल व प्रभावी है।
3	विविधता को प्रोत्साहन देने व आत्मीयता स्थापित करने हेतु क्या क्षेत्रीय भाषा के शब्दों का	क्या प्रदेश की विभिन्न धार्मिक, सांस्कृतिक पहचान वाले व्यक्तियों को पर्याप्त जगह दी गई है। प्रमुख क्षेत्र जैसे: बुदेलखण्ड, चंबल, महाकौशल,

	पाठ्यपुस्तक में इस्तेमाल हुआ है या नहीं, परीक्षण करना।	मालवा, निमाड़, बघेलखण्ड एवं आदिवासी क्षेत्रों में स्थानीय बोली के शब्दों का आवश्यकतानुसार पाठ्यपुस्तक में प्रयोग किया गया है।
4	चित्रों के आकार व स्पष्टता, प्रस्तुति, रंग, समायोजन आदि कैसा है।	पाठ में किस तरह के चित्र दिए गए हैं, उनकी छपाई कैसी है। क्या दिये गये चित्र विषयवस्तु को स्पष्ट करने में मदद कर रहे हैं। चित्रों का शीर्षक विषयवस्तु के अनुसार है या नहीं। चित्रों का आकार, सटीकता, स्पष्टता व रंग संयोजन कैसा है। क्या चित्रों में स्थानीय परिवेश की झलक व स्वाभाविकता मिलती है। क्या चित्रों में कल्पनाशीलता है?
5	पाठ्यपुस्तकें क्या बाल केन्द्रित व बाल सुलभ तरीकों से शिक्षण कराने के अवसर उपलब्ध कराती है या नहीं, समीक्षा कीजिए।	क्या पाठ स्वयं कोई कार्य करने, समूह गतिविधि या प्रोजेक्ट कार्य के अवसर देती है। क्या पाठ बच्चों को संवैधानिक, सामाजिक मूल्यों एवं सांस्कृतिक मेल-मिलाप करने के अवसर प्रदान करता है।
6	पाठ्यपुस्तकों की विषयवस्तु चिंतनशील, मननशील व ज्ञान सृजन में सहायक है या रटन प्रवृत्ति को बढ़ावा देने वाली है।	क्या पाठ में से बच्चों को सोचने-समझने, तर्क-वितर्क करने, प्रश्न पूछने व उत्तर खोजने के अवसर प्रदान किए गए हैं। क्या उसके स्वयं के अनुभव से बातचीत करते हुए पाठ की विषयवस्तु पर ले जाया गया।
7	प्रस्तुतीकरण की शैली	पाठ के प्रस्तुतीकरण की शैली अर्थात् किस्सा/कहानी/घटना आधारित/संवाद आधारित शैली कैसी है।
8	सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के अवसर	क्या सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के अवसर दिए गए हैं। जैसे: क्या बच्चे के स्व मूल्यांकन, आपस में मूल्यांकन, प्रोजेक्ट कार्य से मूल्यांकन के अवसर देता है। इसके साथ दिए गए अभ्यास समझ व अनुप्रयोग व विषय के कौशल विकसित करने वाले हैं।
9	फोन्ट साइज व मुद्रण/छपाई एवं कागज की गुणवत्ता	क्या पाठ्यपुस्तक की छपाई, फोन्ट साइज एवं कागज की गुणवत्ता ठीक है तथा पढ़ने वा समझने के लिए ठीक है।
10	तथ्यात्मक त्रुटि व भाषागत त्रुटियों का ब्यौरा	यदि पाठ में कोई तथ्यात्मक या भाषागत त्रुटि हो तो उसे लिखना।

अपनी प्रगति की जाँच करें

नोट: (अ) अपना उत्तर प्रश्न के नीचे दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।

(ब) अपने उत्तर की तुलना इकाई के अंत में दिए गए उत्तर से कीजिए।

5. पाठ के अवलोकन से क्या तात्पर्य है ?

.....
.....

6. पाठ्य पुस्तक विश्लेषण से क्या तात्पर्य हैं?

.....
.....

7. पाठ्य पुस्तक विश्लेषण में प्रस्तुतीकरण की शैली से क्या तात्पर्य है?

.....
.....

8. सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के किस प्रकार अवसर दिये जाये?

.....
.....

1.6 सारांश

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप—

- पाठ्य पुस्तक की आवश्यकता एवं पाठ्यपुस्तकों की आवश्यकता के विभिन्न कारणों को समझ गये।
- पाठ्यक्रम को समझ गये कि यह एक व्यापक (broader) शब्द है, जो शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त करने में सहायता प्रदान करता है। जिसका निर्धारण अकादमिक प्राधिकरण द्वारा किया जाना चाहिए, जिसमें— संवैधानिक मूल्य, बच्चों को निर्भय बनाने, बाल केन्द्रित, गतिविधि आधारित प्रक्रिया को अपनाया जाय।
- पाठ्यक्रम निर्माण के विभिन्न सिद्धान्तों जैसे: लचीलेपन, क्रिया केन्द्रित, बाल केन्द्रित, सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों के विकास, व्यक्तिगत भिन्नताओं को ध्यान में रखना, सृजनात्मक एवं रचनात्मक, मनोवैज्ञानिक, उच्च कक्षाओं की आवश्यकता पूर्ति, एवं सह-सम्बन्धता आदि के सिद्धान्तों के बारे में जान सके।
- पाठ्यचर्या को समझ गये कि इस शब्द की उत्पत्ति लैटिन शब्द से हुई है जिसका अर्थ होता है दौड़ का मैदान। यहाँ दौड़ यानी रेस शब्द, समय और मार्ग का द्योतक है। पाठ्यचर्या को

वास्तव में एक तय समय के अंदर दिए हुए पाठ्यक्रम को पूरा किए जाने से जोड़कर देखा जाता है। विद्यार्थियों को दिये जाने वाले ज्ञान व अनुभवों को एक निश्चित समय में कक्षाध्यापन के दौरान विषयवस्तु को सुव्यवस्थित करके शिक्षण करना ही पाठ्यचर्या या पाठ्य-विवरण कहलाता है।

- पाठ्यचर्या का विकास के बारे में जान गये कि इसका विकास 1890 के दशक से शुरू हुआ। जिसकी पहली केन्द्रित पुस्तक “दि कॅरिकुलम फ्रैंकलिन बॉबिट” 1918 में प्रकाशित हुई तथा उसके बाद 1924 में “हाउ टु मेक कॅरिकुलम” छपी।
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 के अनुसार पाठ्यचर्या निर्माण के निर्देशक सिद्धांतों एवं ज्ञान के उपागम (Approach) संबंधी कुछ सिद्धान्तों के बारे में जान गये एवं इसके अनुसार पाठ्यचर्या के क्षेत्र, स्कूल की अवस्थाएं और आकलन के बारे में अध्ययन कर सके।
- शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 के अनुसार पाठ्यक्रम का निर्धारण अकादमिक प्राधिकरण द्वारा किया जाना चाहिए, जिसमें— संवैधानिक मूल्य, बच्चों को निर्भय बनाने, बाल केन्द्रित, गतिविधि आधारित प्रक्रिया को अपनाया जाए। पठन—पाठन सामग्री एवं उपकरण, कक्षा के अनुरूप होनी चाहिए। प्रत्येक शाला में एक पुस्तकालय हो, जिसमें समाचार पत्र, पत्रिकाएँ, कहानियों की किताबें तथा खेलकूद हेतु आवश्यक सामग्री एवं उपकरण होना चाहिए आदि के बारे में जान सके।
- पाठ्य पुस्तक के विश्लेषण को एक प्रारूप के माध्यम से समझ गये कि पाठ्यपुस्तक की समीक्षा किन-किन बिन्दुओं के अनुसार करनी चाहिए।

1.7 अभ्यास प्रश्न/चिन्तनात्मक प्रश्न

- 1- पाठ्यपुस्तक से क्या तात्पर्य है। माध्यमिक शिक्षा आयोग ने पाठ्यपुस्तकों के संदर्भ में किस बात को इंगित किया था विवेचना कीजिए।
2. पाठ्यक्रम क्या है। पाठ्यक्रम को बनाने में किन-किन बिन्दुओं की ओर ध्यान देना चाहिए। स्पष्ट करें।
3. पाठ्यक्रम निर्माण के कौन-कौन से सिद्धान्त हैं लिखिए एवं आपके अनुसार इकाई में दिये गये सिद्धांतों के अलावा कौन से सिद्धान्त होने चाहिए।
4. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 के अनुसार पाठ्यचर्या निर्माण के निर्देशक सिद्धांतों एवं ज्ञान के उपागम (Approach) संबंधी कौन-कौन से सिद्धान्त दिये गये हैं लिखिए।
5. उपागम से क्या तात्पर्य है।
6. पाठ का अवलोकन और विश्लेषण से आप क्या समझते हैं एवं आप एक पाठ्यपुस्तक का किस प्रकार अवलोकन एवं विश्लेषण करेंगे। विवेचना कीजिए।

- 7- पाठ्य पुस्तक विश्लेषण से आप क्या समझते हैं एवं एक पाठ्यपुस्तक विश्लेषण को एक प्रारूप के माध्यम से किस प्रकार विश्लेषण करेंगे। स्पष्ट कीजिए।

1.8 प्रगति की जाँच के लिए उत्तर

1. पाठ्यपुस्तकों की आवश्यकता के निम्नलिखित चार कारण हैं:
 - पुस्तकों की सहायता से शिक्षा की प्रक्रिया बहुत ही व्यवस्थित ढंग से चलती है और अध्यापक पूरे समय हेतु योजना बना सकते हैं।
 - पाठ्यक्रम के अनुसार विषय का संगठित ज्ञान एक स्थान पर मिल जाता है।
 - पाठ्यपुस्तकें पाठ्यक्रम में निर्धारित उद्देश्यों को पूर्ण करने में सहायक हैं।
 - पाठ्य-पुस्तकें समस्याओं को हल करने में सहायता करती हैं।
2. पाठ्यक्रम एक व्यापक (broader) शब्द है, जो शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त करने में सहायता प्रदान करता है। बच्चों के सभी अनुभव जो विद्यालय के वातावरण में, घर के वातावरण में, समुदाय के साथ या फिर अन्य माध्यमों से प्राप्त अनुभव आदि सभी का सम्पूर्ण समावेश पाठ्यक्रम कहलाता है। माध्यमिक शिक्षा आयोग के अनुसार पाठ्यक्रम निर्माण के मुख्य सिद्धांत: विविधता का सिद्धान्त, लचीलेपन का सिद्धान्त, समुदाय से सम्बन्धित सिद्धान्त, अवकाश के समय का सदुपयोग से सम्बन्धित सिद्धान्त, पाठ्यक्रम जीवन से सम्बन्धित, विभिन्न क्रियाओं पर आधारित हो एवं समाज की आवश्यकताओं के अनुकूल हो आदि हैं।
3. पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम के उस पक्ष को कहा जाता है जिसे कक्षा में प्रयोग हेतु व्यवस्थित किया जाता है। इसमें अन्तर्वस्तु के अतिरिक्त शिक्षकों, छात्रों तथा प्रकाशकों के उपयोगार्थ सहायक सामग्री एवं कार्य-विधि आदि के निर्देश भी सम्मिलित होते हैं। विद्यार्थियों को दिये जाने वाले ज्ञान व अनुभवों को एक निश्चित समय में कक्षाध्यापन के दौरान विषयवस्तु को सुव्यवस्थित करके शिक्षण करना ही पाठ्यचर्या या पाठ्य-विवरण कहलाता है। पाठ्यचर्या पर केन्द्रित पहली पुस्तक “दि कॅरिकुलम फ्रैकलिन बॉबिट” 1918 में प्रकाशित हुई
4. जिस समय पाठ्यक्रम निर्माण का कार्य पूर्ण हो जाता है तो पूर्ण होने पर ही पाठ्यचर्या का विकास प्रारम्भ हो जाता है तथा इसकी अनिवार्यता को स्वीकारना पड़ता है। सुव्यवस्थित, और सुनियोजित पाठ्यचर्या के आधार पर ही किसी पाठ्यक्रम तक पहुँचा जा सकता है तथा उसमें सार्थक लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है।
अतः सीखने की इकाइयों का कक्षा एवं विषयवार क्रम निर्धारण ही पाठ्यक्रम है। परन्तु पाठ्यक्रम निर्माण की प्रक्रिया पाठ्यचर्या है।

5. पाठ के अवलोकन से तात्पर्य पाठ में निहित शिक्षण संबंधित मुख्यतः पाठ की विषयवस्तु, प्रस्तावना, उद्देश्य, पाठ्यवस्तु, प्रश्नोत्तर, क्रियाकलाप, एवं सारांश आदि का अवलोकन करना है।
6. पाठ्य पुस्तक विश्लेषण से तात्पर्य पाठ्यक्रम में निहित उद्देश्यों, विषय की प्रकृति, कौशल एवं भाषा शैली आदि की जांच परख करना है। क्योंकि आज भी शालाओं में पढ़ने वाले अधिकतर बच्चों के लिए पाठ्यपुस्तक ही सीखने-सिखाने का एकमात्र साधन है, जो बच्चों के सीखने-सिखाने में सबसे अहम भूमिका निभाती है। इसलिए छात्राध्यापकों को इसे विषयवार विश्लेषण कर समझने की आवश्यकता है जिसके आधार पर शिक्षण के दौरान आवश्यकतानुसार उसका उपयोग तो करे लेकिन सिर्फ पाठ्यपुस्तक पर ही निर्भर न रहे बल्कि पाठ्यपुस्तकों के अलावा भी सीखने-सिखाने के अवसर तलाश कर सकें व बच्चों को उनके पहले के अनुभवों के साथ स्वयं ज्ञान निर्माण करने के अवसर कक्षा व कक्षा के बाहर उपलब्ध करा सकें।
7. पाठ्य पुस्तक विश्लेषण में प्रस्तुतीकरण से तात्पर्य किसी पाठ में निहित किस्सा, कहानी, घटना एवं संवाद आधारित शैली से है।
8. सतत एवं व्यापक मूल्यांकन से तात्पर्य बच्चे के स्व मूल्यांकन, आपस में मूल्यांकन, प्रोजेक्ट कार्य से मूल्यांकन के अवसर देना है। इसके साथ ही दिए गए अभ्यास, समझ व अनुप्रयोग व विषय के कौशल विकसित करने वाले हो।

1.9 सन्दर्भ/अन्य अध्ययन

- एन.सी.ई.आर.टी. (2005). राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण संस्थान परिषद्, नई दिल्ली
- एन.सी.ई.आर.टी. (2005). राष्ट्रीय पाठ्यचर्या 2005, पाठ्यक्रम व पाठ्यपुस्तक का आधार पत्र, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली।
- शिक्षा विमर्श पत्रिका (2013). राजस्थान की नई पाठ्य पुस्तकें, जयपुर
- पर्यावरण अध्ययन की पाठ्य पुस्तकों की समीक्षा, देहरादून, उत्तराखण्ड
- पर्यावरण अध्ययन की पाठ्यपुस्तक कक्षा 3, मध्यप्रदेश, पाठ्य पुस्तक निगम, भोपाल
- पाठक, पी.डी. (2015). शिक्षा, समाज, पाठ्यचर्या और शिक्षार्थी, श्री विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
- पाल, हंसराज एवं पाल, राजेन्द्र (2006), पाठ्यचर्या: कल, आज और कल, क्षिप्रा पब्लिकेशन, दिल्ली।
- आहूजा, राम (2004) सामाजिक अनुसंधान, रावत पब्लिकेशन, जयपुर।
- आर. ए. शर्मा (2005). पाठ्यक्रम विकास, इण्टरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ